All Rights reserved.

उत्सव प्रकाशिका ।

अयोध्या

परमहंस लालदास विरचित ।

महात्मा बैदेहीशरण द्वारा प्रकाशित ।

पटना—"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर ।

साहबप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित ।

१८९६.

हरिश्चन्द्राब्द १२.

प्रथम बार ५०० प्रति]

[दाम चार आना ।

श्रीसीतारामौजयति ।

उत्सवप्रकाशिका

पद

रास मधि निरतत स्यामबिहारी । बाजत जंत्र अनेक साज सजि थेइ थेइ सषिन उचारी ॥ गतिदरसावत रसबरसावत थकिरहे नभससिचारी । बिपिनिप्रमोदलताद्रुमरसबसकरत परसपरप्यारी ॥ अतिआनंद बढ्यो तेहिऔसर सखियनमनमुद भारी ॥ सबके मुख चूमत प्रियप्रीतम देत मोद अधिकारी । अरसपरस अंसन भुज दीन्हें बैठे प्रीतम प्यारी । जुगल किशोर धाम छबि निरखत लालदास बलिहारी ॥ १ ॥

सोमबट राजत राजकिसोर। सरजु-तीर सम सुभगभूमिथल कुंजबने चहुंओर॥ कोकिल कीर चकोर मोर गन बोलत मृदुचितचोर। फूले द्रुम बहु बिबिधि भांति के भंवर करत अतिसोर॥ तेहिमधि मंडप बने स्वच्छअति मनिमय खंभसुजोर। तेहि-बिचसिंहासन सुठि सुंदर तापर जुगल किशोर॥ आसपास ललनागन सोभित छबि निरषत टनतोर। लालदास प्रितम प्यारीढिग करजोरिकरत निहोर॥ २॥

रघुबर केलि करत समुदाई। सरजु-तीर सुबनप्रमोद के छटा बरनिनहिंजाई॥ कुंजकुंजप्रति सखा दास सब साज लिये मनभाई। अर्घपांवड़े देत भावजुत करत प्रेमपहुनाई॥ सिंहासन सुठि दिव्य मनोहर तापर लैबैठाई। चवँरकरत कोइ छत्र व्यजन लिये कोइ दरपन लैधाई॥ मंदमंद मुसक्यात छबीले निरषत बदन सोहाई।

करत बिनोद हाँस तेहि अवसर सब के हर्ष बढाई ॥ जब जेहि दिसि चितवत प्रिय-प्यारि मंद हंसनि सुखदाई । तब तेहि हरष होत जेहि बिधि सों कवन सकै कबि गाई॥ लाल सषा तहँ चितवत ठाढ़े नासा मनि रुचिराई । कोटि सूर्य्य ससि छबि दरसावत रसिकन मनहिं फसाई ॥३॥

रघुवर मंदमंद मुसक्यावैं। सिंहासन पर प्रीतम प्यारी छबि से छबि दरसावैं ॥ क्रीटमुकुट मकराकृत कुंडल भालतिलक झलकावैं। मनहुं भान के निकटहि मिलि-करि चपला दुति दरसावै ॥ रुचिर भौंह नयनन की शोभा चितवन बुधि न समावै । मनहुं मनोज चापसर सजिके रसिकन मनहिं फंसावै॥ अधर कपोल नासिका सुंदर चिबुक बरनि नहिं जावै। नासा मनि की झलक कहे को चंदहु जोति लजावै ॥ कंठा कंठमाल मोतिन

के पदिक बरनि नहिं जावै ॥ जनु नवघन पर उडगन नवग्रह वैठे सोभा पावै। भुजप्रलंब भूषनजुत सोभित धनुष बान बनिआवै ॥ सियकर कमल गेंद छबि छाये लालदास बलिजावै ॥ ४ ॥

जुगलछबि देखि मगन भइ आज। स्याम गौर दुति रबि शशि निंदतकोटि काम रति लाज ॥ क्रीट चंद्रिका सिर पर सोभत कुंडल दोउ दिसि राज। कमल बदन पर अलकैं राजत जनु अलि जुरे समाज ॥ नासा मनिबेसरि बुलाक चित चोरत रसिकसमाज। चितवनि ललित मंद हँसि बोलत रसिकराज सिरताज॥ रूप उजागर सब गुनसागर रघुवंशी महराज। लालदास यह छबी बखानत कबिकुल आवत लाज ॥५ ॥

लला तोरि छबि पर वारि वारि जारे। जब जेहि दिसि हंसि चितवत

प्यारे तनमन रहन न संभारे॥ कीटमुकुट छबि सिरपर छाए श्रुतिकुंडल झलकारे। मेचक मृदु घुघुवारे अलकैं मनसिज जाल पसारे॥ केशरितिलक भाल पर झलकत नासा मनि मन मोल लियारे। लालदास छबि रामलला की बरबस लेत जिया रे॥ ६॥

हमारेधन कौशलराज किशोर। जन्म जन्म के हौं गरीब अति अवआये प्रभुजी के ओर॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि भूतिसुख चाहत नहिं मन मोर। स्यामसुंदर तेरे चितवनि की तृषा लगी अतिजोर॥ जो जाचक भयो हरि तुमरो ढिग सो पायो भरिपोर। बारमबार पुकारत है नित लालदास करजोर॥ ७॥

कुंजन मे विहरत रामलला। भरत शत्रुहन व्यजन छत्र लियें चवँरसाज लिये लषनलला॥ सिर पर दिव्य कीट मुकुट

श्रुतिकुंडल सोहै झलक झला ।। गले बैजंती माल बिराजै धनुषबान करसाज भला ॥ कटिपटपीत पितांबर सोहै कोरन लागे मोतिजला । स्याम जलद पर जनु चपला दुति छाय रही सब नखत मिला ।। जरकस की पनही पग राजित जेहि लखि लाजत कामकला । लाल-दास लालन कै सोभा बरबस हिय मे आयहला ।।८।।

किशोरी जी दासन के सुखदानी । जबलगि कृपा करति नहिं जन पर तब लगि फिरत भुलानी।।अवगुन गिरि सम रजकरि जानति गुन रज गिरिसम मानी। ऐसी कृपाकटाक्ष कवन मे स्वारथ ही के दानी ॥ परमारथ के रामप्रिया तुम बेदन कहत बखानी ।। जाकी कृपा चहत ब्रह्मादिक बारबार सनमानी। जाकी इच्छा ते उपजति है तीनि शक्ति परमानी।

श्रीभूलीला उतपति पालन नासकरति जगजानी। लालदास तव चरनकमल पर सूरति निसि दिन ठानो ।। औगुन मोर छमाकरु स्वामिनि मिलहु दास निज जानो ।।९।।

घुघुर वारे वार मनलियारे। चितवनि चित चुभिगये रूप रस निसि दिन कल न हिया रे ।। मृदु मेचक लटके मुख ऊपर हलत हलक मेरो हिया रे। रसिक जनन के प्रान जिवन धन लालदास के मोल लियारे ।।१०।।

तेरे चितवनि जादू से कियारे। स्यामसरोज नयन रतनारे चुभिगये मेरे हियारे ।। जब ते दृष्टि परी प्रीतम की तन मन सुधि न जियारे। लालदास विरहिनि दोउ अंखिया मिलन चहति निज पियारे ।।११।।

लला मोपै जादू डारा रे । हसंनि

फसनि मनगसनि भौंहं की नयन बान गहि मारा रे ॥ तलफत फिरत बिरह के मारे अवषधि कोइ न बिचारा रे ॥ लालदास जब मिलिहौ प्रीतम तब मिटि है जियजारा रे ॥१२॥

धनुष कैसे तोरि हैं राजकुमार। सिरसि सुमन सुकुमार मनोहर कोटि मार लखि हार। सकल सभा मति भोर भई अति काहू चित न संभार॥ अब मोहि शंभु चाप गति तोरी राखहु लाज हमार ॥ स्याम सुंदर से प्रीति लगी अब दूसरि गति न हमार। कि तनु प्रान कि प्रान ललन संग यैही प्रीति बेवहार॥ प्रीति प्रतीति लखे सिय जू की रघुवर सब सुखसार। लालदास के प्रभु धनु तोर्‌यो भै जगमंगलचार ॥१३॥

शंभु सरासन तोरि आज रघुनंदन राजत राजसभा। रंगभूमि सर कुमुद

नि फूले सकुचे लखि मनो भानु प्रभा ॥ कौशिक रूप पयोनिधि मानो रामचंद्र मुख चंद्रप्रभा । प्रेम बारि उमग्यो तेहि अवसर रोकत हू मन नाहिं थँभा ॥ रानिन सहित बिदेह मगन मन रूप माधुरी जाय चुभा । जनु कमलन पर भौंरा बैठे अस्थिर होइ के रसहिं लुभा। मिथिला पुर नर नारि हरष कहि जात नही जेहिं भांति जो भा । पूरन भयो मनोरथ सब को सीय राम संजोगम भा ॥ मंगल गान निसान नगर नभ अति अनंद सबही मन भा । लालदास छबि कहंलो बरनो सेस सारदा कहत न भा ॥ १४ ॥

सोहत राम सिया प्रिय जोरी । रंग भूमि सर कमल फूले जनु चंचरीक दृग भै सब कोरी ॥ श्यामल गौर किशोर बयसु बपु सोभा सागर लेत हलोरी ।

सिय जयमाल मेलि रघुबर उर चितवति छबि चित बिबस भयोरी ॥ चतुर सखी समझाय कह्यौ तब चरन कमल परसो प्रिय कोरी। गौतमतिय गति सुरति करत सिये अति सभीत नहि चरन धरोरी॥ ओ पति त्यागयाते सिला भइ चरन परसि पतिलोक गयोरी । पतिदेवता सुतीय सीय सुचि रुचि बिलोकि पिय हिय हहरोरी ॥ प्रीति पुनित छकाय सखिन संग निज समाज को गवन कियोरी। राज कुंअर जब गुरु पहंआए लालदास लखि हरष भयोरी ॥ १५ ॥

दो० सिंहठवनि सिंहचलनि, सिंह राज रघुराज। लखि सब नृपकरि सम भयो, राम लखन छबिआज ॥ १ ॥

निरखि सखीरी राम लखन छबि आज। मुनि कौसिक समीप प्रिय प्रितम बामदहिनदिसिराज॥स्यामलगौरकिशोर

बयस एक सील सिंधु सिरताज। अंग अंग प्रति मार निकर मिलि हारे सहित समाज ॥ चौतनि सिरनि अलक सुमन जुत जनु फनि मनि जुत साज। कानन कनक फूल चित चोरत कोटि सूरज ससिलाज ॥ भाल बिसाल भौंह बांकी जनु काम धनुषछबि भ्राज । केशरि तिलक पटल दुति छाये लालदास के काज । व्याह समय बनि ठन के आज ॥१६॥

मंडप तर राजत राम सिया । स्याम गौर बपु बरन हरन मन निरखतही सुख होत जिया ॥ माथे मौर मोरि दुति दरसत सूर्य्य चन्द्र छबि छीनि लिया । सेहरा लटकि रही कटि लौ जनु मनसिज जाल पसारि दिया ॥ बागा चमकदार चमकत मनुचपला बैठि मन थीर किया। सियसारी सोभा के रसबस लालदास लखि हरष हिया ॥ १७ ॥

दूलह श्रीरघुनाथ बने छबि सुंदरता मरजाद सोहाई। कोटि कोटि रवि तेज प्रकासित कोटि ससि सीतल ताई॥ जालिम जुलुफ जौहरी सोहत सिर पर मोर रहे छबि छाई। सेहरा लट कि रहे चहुं दिसि जनु भानु प्रभा लखि रहे सकुचाई ॥ पान खात मुसुक्यात बचनमृदु बोलत रसिक जनन सुखदाई। नासा मनि डोलत अधरन पर चितवतही चित्त लेत चोराई॥ जामा लाल लाल अंग सोहत जोहतही मन जात भुलाई। पीत उपरना दुहु दिसि मोती छोरन लगे करोरन ताई ॥ कंठा कंठ माल मोतिन के गजमुक्ता रुचि अधिक बढाई। पावन लाल महावरके छबि निरखत प्रान प्रिया मनलाई ॥ लाल दास यह प्रीति परस्पर सो जाने जाके हिय आई ॥ १८ ॥

सियाके बनरा अजब रंगीला मेरे यार। मिथिला पुर के स्यामा सषी सबहिलि मिलि कहति हजार ॥ हमतो जाय निकट प्रीतम सो मिलि हौं भरि अक-वार। अधरसुधारस पान करों जबजीव-न लाभ हमार॥ अबतो लाज को का-ज नहीं कछु नाहीं कुल ब्योहार। लाल टास यह रूप माधुरी कतल करि यक सार॥ १९॥

अथ बसंत—आयो बसंत अनंत साज सजि सीयरघुनंनद के सुख छायो कुंज बसंत पुंज सषिअन संग श्री मिथि-लेश किशोरी रमायौ॥ जंत्र बाद्य बहु वजत सजत सुखनृतत अंगन अंग मिला-यौ। ढुरनि मुरनि गति चलनि नवनि प्रिया हाव भाव करि पियहि रिझायो मृदु मुसक्याय लगाय अंस भुज कुंजन कुंजन मे बिहरे। कहुं परजंक अंक सखि

अन लिये कोक कला बहु केलि करे लेत देत सुष सबहि परस पर मोद प्रमोद बिनोद भरे। लालमनी लालन प्यारी दोउ कोटिकाम रति को निदरे ॥ २० ॥

श्लोक—बसंताख्य ऋतु रम्याललना गणा रंजिता। नानाद्रुमानि कुसमानि भ्रमरा रसलोभिता ॥

आयोबसंत रितु अति अनन्द। खेलत पिय प्यारी रसिकचंद॥ इत सखा अनुज रघुबर बिराज।झोलिन अबीर के- शरि को साज॥ बाजत मृदंग उठत तरंग सावन झरि सी अति बरषरंग ॥१॥

उत सखिन संग सिय करि सिंगार। चलीं करन आज प्रीतम सो रार॥ कोउ फूल छरी पिचकारी हाथ। कोउ रंग घड़ा भरि धरे माथ॥ २ ॥

गावहिं सखिया मिलि सरस राग। जीतन हित दोउ दिसि होड़ लाग॥

मारहिं गुलाल पिचकारि साज। अति रोस भये गये भागि लाज ॥

यह लाल लली रस केलि गाय। भव सागर बिनुस्रम पार जाय ॥ कह लाल दास किमि अति गवार। जाके गुन बेदन पावपार ॥

चलो षेलिये रंग होरी। बन प्रमोद रस खोरी ॥ श्रीसरजूतट कुंजे। जहां कोकिलादि बहु कूंजे ॥ फूलन पर मधुकर गुंजे। लै पराग रस पुंजे ॥

जहां सखासंग प्रभु बिहरे। फागुन रस रंगन लहरै ॥ प्यारी संग सखिया सोहैं। लखि लालन के मन मोहैं ॥२॥

श्री जनक लली मुसुक्याई। प्रीतम दिसि सैन जनाई॥ रंग से हौज भराई। होरी के साज सजाई ॥

दुहुं दिसि मृदंग धुनि बाजै। मानो सावन घन गाजै॥ गावत निरतत रस

सरसे । सखी प्रीतम के अंग परसे ॥

एक एक गहि लीन्ही । जस मन भायो तस कीन्ही ॥ रंगन ते कीच मचाई । जनु मघामेघ झरिलाई ॥ लालदास के प्यारे । प्यारी अंसन भुज धारे ॥ सखि छत्र चमर सिर डारे । मुख चंद्रहि सबही निहारे ॥ २१ ॥

बसंत—रितु बसंत अति प्रीति खेले दोउ लालन हो। बन प्रमोद बिच कुंज बने रंग जालन हो॥ फूले कुसुम अनेक रंग बहु मालन हो । तेहि लखि स्यामा स्याम उमग सब बालन हो ॥ बाजत ताल मृदंग देत कर तालन हो । गावत तान तरंग चलति गति चालन हो ॥ रीझे लाल लली मगन मन टालन हो। थकित भये रस राज परत नहि फालन हो॥ अति अनंद दुहु ओर रही कछु हालन हो । लालदास

मनमीन फसे छबि जालन हो ॥ २२ ॥

इतनी अरज मोरि मानु संवलिया अब न खेलै ऐसी होरी। तुम नरराज किशोर जोर बर हौं सुठि राज किशोरी ॥ हौं भोली होली नहिं जानी तुम छल छंद भरोरी। बरबस बाँह पकरि झकझोरी हँसि चोली बन तोरी ॥ बेदरदी कछु दरद न जानी अबहिं उमिरि कि थोरी। लालदास प्रीतम प्यारी की होरी रहस कह्योरी ॥ २३ ॥

ऐसो होरी रंगीली पिया सँग खेलति प्यारी। सरजूतट सु बनप्रमोद में कुंज बने चहुँ ओरी। रतनजटित मंडप तेहिँ अंतर मनिमय खंभ करोरी॥ दाम मुक्ता नहिँ थोरी। सखा सखिन की भीर भयो तहं को बरनै छबि सोरी ॥ खेलत फाग परसपर हिलिमिलि नाचत दै दै तारी। देन लगे झुकि गारी ॥

बाजत ताल मृदंग झांझ डफ धूम मच्यो अति भारी । अबिर गुलाल कुमकुमा केशरि एकएक पर डारी ॥ कोई नहि मानत हारी । जनकलली तब निज सखियन जुत लालहि घेरी प्रचारी ॥ दोउ दिसि हौज भरे रंगन से मार परेपिचकारी । देह सुधि सबही बिसराई ॥ पकरि लियो सिय राम कुँअर को रंग घड़ा भरि डारी । झपटि लपटि गहि स्यामसुन्दर तन मनमथ पीर निवारी ॥ कपोलन परसत प्यारी । अरस परस अंसन भुज दीन्हे कोटि काम रति वारी ॥ जयजयकार करत ब्रह्मादिक लालदास बलिहारि । निरखि उरआनंद भारी ॥ २४ ॥

खेलन आयो मेरे रसिया कहति परसपर सखिया । सखा अनुज संग बनि ठनि प्रीतम चितवत दिल कर घतिया ॥ तापर मृदु मुसुक्यानि फसनि

मन अधरन पर की मोतिया। कुल की कानि छाडि सुनु सजनी श्याम सुंदर से लगाइये अंखिया ॥ लालदास अवसर के चूके बिरह अगिनि जरिहै नित छतिया ॥ २५ ॥

मोरि बहियाँ पकर ना अवध के छयल। मोका जान दे घर पिय गहर भयल ॥ नाजुकतन तोहि दरद न लागे चोली बन तोरि उरोज कर धैल। रस गरजी वरजो नहिँ मानो करत फिरो मोसे नितहि फयल ॥ लालदास प्रभु रसिक सिरोमनि रस करि बस करि रोकत गयल ॥ २६ ॥

होरि खेलत मोसे नई से नई। अचरा पकरि मोरी बहियां मरोरी आजु लाज सब गईरे गई ॥ अँगिया के बन तोरी सांवरो जोवन के रस लईरे लई। लाल-

दास लालन सो कबहुँ जो न भई सो भईरे भई ॥ २७ ॥

मुरति तेरे कैसो बनी महराज । काकपच्छ इव अलक बिराजित बिच बिच सुमन बिराज ॥ जनु फनि मनि जुत करत कलोलहु सुखसागररसराज सिर पर क्रीट श्रवन बिच कुंडल भाल तिलक सुचि साज ॥ श्याम जलद सबिता चपला मिलि काम मीन तहँ छाज । बिकट भृकुटि आनन सुखमा निधि चितवनि अमित मार लखिलाज । नासा मनि मुसक्यानि हरन मन लाल दास सिरताज ॥ २८ ॥

मिथिलापुर आजमची होरी । रहो- बरात मास फागुन लौं दिन दिन होत अनंद करोरी ॥ श्रुतिकीरति उरमिला मांडवी सिय जु के संग सखी गोरी । सजि शृंगार साज होरी के पिय से

खेलन चलो दौरी ॥ रघुबर लछिमन भरत शत्रुहन एक बयस के सखा जोरी । जरकस पाग केसरिया जामा रितुबसंत फूलेसोरी ॥ दोउदिसि हौज भरे रंगन से अबिर गुलाल भरे झोरी । बाजत ताल मृदंग झांझ डफ धूममचे खोरी खोरी ॥ खेलतफाग परसपर हिलिमिलि एकन एक मले रोरी । बिबस भये गयेलाजसबन के सियजू हंसे मुख मोरी मोरी ॥ लाल लली दोउ खेलत परसपर पकरि पकरि रंग से बोरी । लालदास छबिदेखि मगन भये सुधि बुधि सकल भये भोरी ॥२६॥

कनकभवन होरी सुनुसखि या खेलत हैं मिलि के दोउ रसिया । बाजत जंत्र अनेक साज सजि नाचत हैं मिलिकै सबगतिया ॥ होरी गावति लाल रिझावति मृदुमुसकाय मिलावति अखियां । उडत गुलाल अबीर कुमकुमा पिय

प्यारी को लावत छतियां ॥ लालदास यह रसिकन कों रस और बनाय कहै का बतियां ॥३०॥

कनकभवन में फाग मची है खेलन के हित आयोरी। एक एक ते समाचार सुनि प्रेममगन उठि धायोरी ॥ अति से भीरभयो महलन में धुनि मृदंग नभ छायोरी। गान करति मधुरे धुनि सखियां निरतत गति दरसायोरी ॥ उडत गुलाल लालभयो दसदिसि अंखियन लाली छायोरी। जनकलली रघुलाल सांवरी कोटि मदन मद नायोरी॥ रसिक जनन के प्रान जिवन धन लालदास मनभायो री ॥३१॥

आज रंगमहल में होरी देखन के चली सब गोरी। एक ओर सिय सखिन साथ लै रामसखा संगजोरी ॥ रामजि के हाथ कनक पिचकारी सीय अबीर लयें

झोरी। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ धूम मची चहुँओरी ॥ दोउदिसि हौज भरेरंगन ते पिचकन मारपरोरी। एकन एक मसल मुखरोरो गारो देत हँसोरी॥ रामसिया सिय ऊपर रघुबर हँसि हँसि केशरि ढोरी। निज निज जोरी होरी खेलें धरि धरि रंगन बोरी॥ अति से मगन भये पुरवासी गलियन कीच मचोरी। सुधि नहिँ रही सरीर सबन के बेतन मार परोरी॥ सखि गनघेरि लियो रघु-बर को माल पितांवर छोरी। फगुआ लिये बिन जान न देहौं करिहो जतन करोरी॥ हंसि बोले हारे रघुनंदन जीते जनककिशोरी ॥ लालदास ते धन्यं रसिक यह जो यहि रंगरँगोरी ॥३२॥

चौतार—चलो देखन आज सखी मिथिला पुर राजकुंअर दोउ आये। कौशल्या सौमित्रानंदन नृपदशरथ के

जाये ।। बिश्वामित्र जज्ञ रच्छन हित इनहिं मांगि लै आये। एक तीर तकि हती ताडिका सो निज लोक पठाये ॥ प्रीति प्रतीति भये मुनिवर मन बिद्या सकल पढाये। यज्ञ करन लागे कौशिक मुनि खबरि निसाचर पाये ॥ हा हा कार करत सब धाये खल मारीच भगाये। पावक सर सुबाहु पुनि जारे लखन कटक बिचलाये ॥ कछु दिन तहां रहे रघुनंदन रिषि संग बहुरि सिधाये। गौतमनारि तरी पदरज ते निजपति लोकहिं पाये ॥ करि अस्नान भगीरथ गंगा बिप्रन दान लुटाये। पुर रम्यता देखि सुख पाये छबि बरनत मन भाये ॥ गुरु आज्ञा ले बाग तकि उतरे नृप बिदेह सुधि पाये। मिलन हेतु सजि साज चले पुनि मन आनंद अनमाये ॥ करि प्रनाम मुनि कुशल प्रश्न कहि आय गये दो

भाये। देखि रूप अनरूप मगन भये देह दसा बिसराये॥ बहु बिधि करि सनमान गये ग्रिह प्रीति के रीति सोहाये। गुरु आयसु लै नगर देखन के सजि सिंगार छबि छाये॥ बालक वृंद देखि अति शोभा नयन सो नयन मिलाये। एक सो एकहि समाचार सुनि नगर लोग उठि धाये॥ लालदास छबि रामलला की देखि सुरति बिसराये॥ २३॥

चैतार— लगली सुरतिआ हो रामा तुमरे ढिग हो। निसु दिनु बिसरत नाहीं साँवली सुरतिआ॥ लालसखी जोरि कर करत बिनतिआ॥२४॥

प्यारे के रसीली अंखिया मनलीन चोराये मोरे रामा। रस भरि सूरति सूरति रस टपकत जाए। रस रंग बोलनि चालनि रस रीति सोहाए। लालदास येही रस रसिकजन जग जीवत जाए॥२५

प्यारे तोरि बाँकी चितवनियां खटके दिन राति मोरे रामा । नहिभावत घर के रहना छिन छिन अकुलात ॥ बटिया जोहति रहि ठाढ़ि सरजूतटजात। लालदास बिनु प्रभु देखे चित नहि ठहरात ॥ ३६ ॥

अथ बधाई ॥ रागआसावरी ॥

कौशल्या गृह प्रगट भयो है ब्रह्म पूरन अवतारी । सुंदर श्याम कमलदल लोचन निज आयुध भुजचारी ॥ देखत अद्भुत रूप मगन भय नैन निमेष निवारी । पुनि धीरजधरि अस्तुतिकीन्ही कहि महिमा अधिकारी ॥ तुम ब्रह्मादि जनक जगस्वामी यह अचरज अति भारी। ममउर बास कियो करुणा निधि भो प्रभु मुनिमनहारी ॥ ज्ञान अखंड देखि माता को निजमाया बपु डारी। बोलीं मातु कमल कर जोरे शिशुलीला अति

प्यारी ॥ सुनि प्रियबचन सुजानशिरो-मनि बालरूप पुनि धारी। अतिप्रिय रुदन किये तेहि अवसर सुनि पुर की सब नारी ॥ यूथयूथमिलि चलीं राजग्रिह कर लिये मंगल थारी। आरति करति मुदितमन सखिया बहुविधि मनिगन-वारी ॥ लालदास छबि देखि मगन भई नयननिमेषनिवारी ॥३७॥

आज अवधपुर बजतबधाई कौशिल्या सुत जाई। अति से मगन भये पुरबासी प्रेमदसा उठिधाई ॥ गावत निरतत भो मन भावत मुदित राउग्रिह आई। कंचनकलस बिचित्र थार भरि मंगल-साज सजाई ॥ चोवा चंदन अबिर अर-गजा केशर रंग उडाई। तोरन केतु पताक चहूँ दिसि मंगल बिपुल बनाई। गजमनि रचि बहु चौक पुराई कंचन कलस धराई। मंगलगान करनि पुर-

बनिता निर्तति गतिदरसाई ॥ मोद प्रमोद बढो तेहिअवसर देहदसा बिसराई । शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक सुमन वृष्टि झरिलाई । लालदास छबि रामलला की चित मन बुधि न समाई ॥२८॥

श्रीकिशोरीजू कीबधाई ॥

रायजनक के जोगसिद्धिफल प्रगटी सीताआई । कोटिन ब्रह्मांडन के प्रभुता रोमरोम रहछाई ॥ रामभ्रमररहित कमल प्रगट मनो मिथिला सर समुदाई । रसिकनप्रान मीनहित जल जनु अधिक अधिक उमगाई ॥ सुनि नरनारीहर्षि उठिधाये मंगलसाज सजाई । गावत नाचत करतकौतूहल मुदित राजग्रिह आई ॥ देखि कुंअरि छबिसदन मगन भई पुनि पुनि लेति बलाई । तेहि अवसर ब्रह्मादिदेवता निजनिज साज बनाई ॥ गावत गुन गंधर्ब अपछरा नृत्य करत

मनभाई। जय जय श्रीमिथिलेशनंदनी कहत सुमन बरषाई ॥ जाके जस श्रुति सेस सारदा कहत रहत सकुचाई। श्रीरामाह्लदमणि किमि बरने सीय कृपा कछु पाई ॥३९॥

नृपतिगृह आजु मंगल माई अनुदिन अधिकाई। रानी सुनयना सुखद सुकृति मय सुता प्रगट जाई। सुरनरपतिनी जितनी आई आनँद सरसाई। आरति करति निछावरी मनि-गन निरतत मनभाई॥ जेहि सुखके ब्रह्मादि देवता निसिदिन तरसाई। लाल दास तेहि सुख मिथलाधिप गोद मोद छाई ॥४०॥

आज मिथिलापुरसुखदाई। सुनयना सुता सुभग जाई। रूप गुन कहत न बनीआई। सेस श्रुति सारद सकुचाई। मुनिन जेहि ध्यानहु नहि पाई। चरन

नित सेवत मनलाई॥ जाकी कृपा कटाक्ष को सब चितवत मनलाय। सोइ निज इच्छाते प्रगटी बर बाल रूप भइ आय। हरषि सुर सुमनन झरिलाई। दान नृप दीन्हीं मनभाई॥ आसिष करत सुजस-गाई। मगन भई सुधिबुधि बिसराई। चित्र सी खडी रही आई॥ कोइ निरतति कोइ गावती कोउ बहु जंत्र बजाय। लालदास तेहि छन की सोभा बरनि कवन बिधि जाय॥ मनोहर मूरति मन भाई॥४१॥

झूले सो पालने सिया प्यारी। जाके रचना अति बिचित्र लखि बिधि हू की मतिहारी॥ गज मुक्ता के झालरी झबू लट्टू रतन सवारी। मैया हरखि-झुलावति गावति लालदास बलि-हारी॥४२॥

बिनदेखे रह्यो ना जाय मिथिला

नागरिया । जहां जनमी जगजननी जानकी रूपगुनन की आगरिया ॥ गृहगृह मंगल साज कलस ध्वज तोरन मोती मालरिया । चौके चारु रच्यौ सिंदुरमणि जे लखि विधि मति बावरिया । लालदास सुर सुरपतिनी मिलि तन मन करत निछावरीया ॥४३॥

हमारी सिया रूप गुनन की खानी। मैया गोद मोद भरि लीन्ही छिनछिन उर उमगानी ॥ तुम मम प्राण जीवनधन सबके बोलहु अमृत बानी। ठुमकि ठुमकि आंगन बिचरो मेरि निमिकुल की सुखदानी ॥ जेहि सुख की लालसा रहति शिव अवर सकल मुनि ज्ञानी।लालदासतेहि सुखहिसुनयनालाभअवधअधिकानी॥४४॥

पगनिकवचलिहै मेरी सियप्यारी । बारबार उरलाय मल्हावति प्रेम मगन महतारी ॥ भूषन बसन संवारि

निरखि छबि लेही मातु बलिहारी। बाल बिनोद मोद भरि सब उर तनमन सुरति बिसारी ॥ जाके गुन गावत सनकादिक सेस सारदा हारी लालदास तेहि निरखि सुनयना नयन निमेष निवारी ॥४५॥

अथ झूला—झूलत सरजूतीर हिंडोले। भरत लखन रिपु दवन लाल-संग प्रेम मगन रघुवीर ॥ गावत मेघ मलार तान मृदु मोहत मुनिमन धीर। मधुर मृदंग मनहु घन गरजत प्रेम उमग झर नीर ॥ हरिहरि भूमि बहत सुगंधजुत सीतल मंद समीर। लाल-दास मुसुक्यानि लाल की हरन हिया की पीर ॥४६॥

सिया रघुनंदन झूले हो श्री सरजू के कूले। हरेहरे भूमि घटा झुकि आई द्रुम सुमन सब फूलेहो ॥ नान्हि नान्हि

बुंद पवन पुरवाई लागत काम के चूले हो। सखिगन मधुर झुलावहिं गावहिं नृत्य करहिं सम तूले हो॥ लालदास श्री लाल लली लखि मगन प्रेम रस भूलेहो ॥४७॥

कदमतर झूलत सियारघुबीर। कोटि कामरति दुतिनिंदत दोउ स्यामल गौर सरीर॥ चहुंदिसि घटा घेरि घन आये बरसत धीरेधीर। प्रीतम अंग दुकूल भीज अति प्यारी के अंगचीर॥ गावति राग मलार सखीगन तालदेति अतिधीर। लालदास अति प्रेम मगन भये नयनन से झरि नीर ॥४८॥

प्रीतम संग झूलति प्रान प्रिया। घन दामिनी इव दमकिदमकि अति छिन छिन बरसत नेह हिया॥ मंदमंद मुसुक्यानि सानि रस चितवनि कतल किया। लालदास श्रीरामलला के अद्भुत मौज दिया ॥४९॥

रंगिली सिया झूलति प्रीतम संग। झोंकादेति मंद मुसुक्यावत सरसत बरस- त रंग॥ दै अंसन भुज मिलि करि दोऊ पल पल बढत उमंग। लालदास यहि झूलन की छबि लखि रति पति मद भंग ॥५०॥

झुलन आये हैं हो दशरथराज दु- लारे। सरजूतीर प्रमोदपिनमें॥ लता झुमिरहि बहुकुंजन में। फूले सुमन रंग रंगन बहु भवरो गुंजारहे हो ॥ कोकिल मोर चकोर अलापे हरि हरि भूमि घटा झुकि तापैं चमकत बिज्जु बहुत पुर- वाई परत फुहारो है हो ॥ लाल लली झुलहिं अनुरागे। सखा सखिन मिलि गावन लागे। लालदास तहं चितवत ठाढ़े तनमन वारे है हो ॥ ५१ ॥

झुलन पधारीहै हो श्री मिथिलेश किशोरी। रतन जटित मनि बनी

हिंडोलना झमकि झुलायरही सब ललना मंदमंद मुसुक्याय छबीली पिय तनहेरि हैंहो ॥ दोउ मिलि गावत जंत्र बजावत मेघवा अधिक अधिक झर लावत । चलत पवन चपला चमकत हिय रहन संभारी हैंहो । कनकभवन छबि अधिक लसी है यह रस मेरे मन मे बसी है । लाल-दास छबि निरखि निरखि उर आनंद भारी हैंहो ॥५२॥

हिंडोलना मे झूलोहो मेरे यार दशरथ नृपराज दुलार सरजू तीर प्रमोद बिपिनि मे झुलन कुंज बिचार ॥ कंचन खंभ जडाऊ राजे छतुरी पटुली अद्भुत भ्राजे । रेशम डोरी गुहि मोतिन से सखिया झुलावनहार ॥ हरि हरि भूमि घटा झुकि आई लागे परन फुहार । चमकत बिज्जु बहत पुरवाई सरजू

अजब बहार ॥ सप्तसूर तीनग्राम मूर्छना एकइस लो विस्तार । श्रीसरजू जल शब्द बिचारी पल पल होत उचार ॥ कोकिल मोर चकोरन के मिस मुनि-जन करत पुकार । लालदास के संग लीजिये गावै चरित तुम्हार ॥५३॥

झूला न झूले जानेहो मोरे यार । हो तु रसिक फागु दिनन के सो हम जानी यार ॥ सखियन मे मिलजुलि के प्रीतम निस दिन करत बिहार । लाल-दास यह रसिकन के रस कोउ यक जाननिहार ॥५४॥

झूला झूलौ सुखदानी मेरो सांवलिया । चहुंओर घन उमडि घुमड आये बरसत रिमिझिमि पानी ॥ गावत राग मलार तानमृदु कोकिल कंठ ल-जानो । बाजा बाजत अति सुख छाजत नृतत सब रस सानी ॥ यह रहस्य उर

दीजिये प्रीतम हौ प्रभु अतुलितदानी । लालदास पर करहु कृपा अब दास आपनो जानी ॥ ५५ ॥

सिया पिया झूले कदम के छहियां । सखिया झुलाय गाय हलरावति श्रीसरजुतट महियां ॥ मंद मंद बरसत घन गरजत चलत पवन पुरवैया । लालदास दो लाल लली मिलि अंस परस पर बहियां ॥ ५६ ॥

झूले नवल हिंडोरे पिय प्यारी बनी ठनि संगस्यामा । जुगल खंभ मणि जटित खचित नग त्रिगुन डोरी जरकसो ऐडमिलि कारो पटुली हेमखचित जगमगित तडित दिसि धामा ॥ लाल रागिनी उचारी प्यारी करबिन कारि बनघन पिक कोल नवीन सुरधारी सुक भरत खरज स्वर ग्रामा । पावस प्रीतम प्यारी प्रफूलित फुलवारी झुलन प्रबाल

पटल बिबस सी चल सुंदर दृग चकोर। थकित चकित रहि सकुचि कोटि रति कामा ॥५७॥

लालजू झूलत हिंडोले संग जन-कलली। तरुन तमाल मेघ दुति निंदत चपला चमक अरु चंपकली॥ मोतियन माल बलाक दुति करखत इन्द्र धनुख सिय सेनुर भली। सावन स्याम सिया छबि निरखत लालदास हिय हरख रली॥ ५८॥

प्यारे के सांवली सुरतिया नयना लागिगेलोना। खटकत्त रहत दरस बिनु देखे रामा बिरह के मारे जैसे झरे झरना॥ जोमै जनत्यूं ऐसे जदुआ भरि हैं रामा काहे के जातिउं मै उहवां देखे झूलना। लाल दासऐसे प्रीति बिना रामा पाये मानुष जनमवां के कछु फलना॥ ५९॥

इति झूला।

लागी प्रीति जानकी बर से । यह संसार असार निरखि मन जित देखो तित स्याम नजर से ॥ जैसे चंद चकोर भानु लखि प्रफुलित होत कमल बसि सरसे। वैसे मीन बारि तजि जीवन पलक कलप सम बीतत धर से ॥ जोग बिराग ज्ञान साधन फल परम प्रेम हृदय मे सरसे । लाल दास यह होइ तबै जब राम रूप निसि बासर दरसे ॥६०॥

मन हमारा बस गयो रघुराज सुंदर स्याम सो । प्रीति की डोरी कसी सुधि गई तन मन धाम सो ॥ मुकुट की झूकनि झलामल कुंडलनि झुमकानि सो । अधर मोती चमक चंचल चंचला घनसार सो । कृपा करि जिस ओर हेरैं नयन फेरनि सान सो । लालमनी तेहि होत बस रतरहत आठो जाम सो॥६१॥

सिया महरानी तेहारी सरनन में ।

चहत सदा चित रहनि गहनि नित थिर न रहत या मन इन्द्रिन में॥ जन्म अनेक मोहि इन्ह जीत्यौ अब तुअ चरन गहौं या कलिमें। लालमनी फिरि खोजे न पैहौबिरदकीलाजकरोयाछनमें॥६२॥

कौने मद भूले बिगारे सब कमवां। जग कर सपना भोग लखत ना जोरत रहत लाखन कर जमवां॥ जरत गरब को सोच करत ना कियो रे कौल जपो हरि नमवां। सुत वित बनिता संग रहत नाजीवन चपल लखो हरदमवां॥ बिश्वरूप हरिचरन गहत ना करतब नीच चहत सुखधमवां। लालदास पछिताय रहोगे जब पकड़े जमदूत गरदनवां॥६३॥

दशरथसुत श्रीजनकनंदिनी प्रात-काल उठि जागे। आलस जुत जमुहात पलंग पर प्रिया प्रेम रस पागे॥ निज निज सेवा साज सजे सखि जूथ जूथ

मिलि बागे। गान करन लागे मधुरे स्वर दरसन हित अनुरागे॥ मंगल थार धरे सरजूजल पान करावन लागे। दै आचमन पोंछि मुख निरखत रूप माधुरी लागे॥ आरति करति स्याम स्यामा के नृत्य गान सुख पागे। लालदास श्री लाललली के चरनकमल चितलागे॥६४॥

जय जय श्रीमिथिलेशनंदिनी जय श्रीअवधबिहारी। बंदीजन द्वारे जस गावैं जयजय जयति उचारी॥ गान निसान कोलाहल कौतुक होत मोद अति भारी। जय जयकार करत ब्रह्मादिक नृत्य अपछराकारी॥ लालदास श्री वन प्रमोद में नित उठि पंथ निहारी॥६५॥

जागे प्रीतम प्यारी भोर भयो। मधुर मृदंग बीन मुरली धुनिगावत मुनि मन हारी॥ कमला बिमला चंद्रकलादिक सेवा साजसुधारी। कोउ सखि श्रीसरजू

जल लीन्हो भरि कंचनके झारी॥ लाल दास श्रीरामलला के चरनकमल बलिहारी ॥६६॥

मूरति तेरि सूरति की बलिहारी। चरनसरोज जानु उरु कटि की सिंह ठवनि गति न्यारी॥ नाभि गंभीर तीनि रेखा बर पदिकहार दुतिकारी । कंबु कंठ गजरा मोतिन की भांति अनेक संवारी॥ अलक झलक कपोल ढिग राजित मनसिज जाल पसारी॥ अधर अरुन नासा मनि डोलन चितवनि सान सिकारी॥ कुंडल मुकुट झुकनि कलगी की लालदास हितकारी॥ ६७॥

देखोरी सखि राघोजी के रूप अनूप। सेहराजुत सिर मौर बिराजत डारत है रस कूप॥ व्याह बिभूखन बसन अदूषन लखि सारद मति चूप। लालमनी के प्रान पियारे सब भूपनके भूप ॥६८॥ इति पद॥

अथ हनुमंत बधाई।

रागआसावरी—मारुतनंदन जग अभिनंदन प्रगटे भूपर आई। अंजनि दिव्य भूमिमनि आकर हनुमत मणि प्रगटाई। देवनके दुख दारिद नासे निज निज थलहि बसाई॥ कातिक मास असित पक्ष चौदसि बार जोग सुभदाई॥ चर अरु अचर गगन जलथल दिसि आनंद उर न समाई॥ व्योम बिमान गानधुनि गंधर्व नृत्यत सुर समुदाई। इन्द्रादिक ब्रह्मादि देवता सुमन वृष्टि झरिलाई॥ केशरिनंदन जग अभिनंदन कीरति अचल चलाई। लालमनी पर करहु कृपा प्रभु भक्ति निछावरि पाई॥६६॥

कातिक मास असित तिथि चौदसि श्रीहनुमत अवतार लियो। केशरिनंदन जनमनरंजन सजि सुख सबहि दियो॥ सीतल मंद सुगंध पवन चलि

मेघन छांह कियो । बरषत पुष्पमाल इन्द्रादिक जै धुनि शब्द कियो॥ नाचति नभ अपसरा मुदितमन प्रेमपियूष पियो। चौदह भुवन चराचर दश दिसि आनन्द हुलसि हियो॥ लंक संक आनंद देव गन जीवन सबहि जियो। लालमणी भव उदधि मगन लखि बूडत काढि लियो॥७०॥

बधाई मारुती गावो। सुमन की माल बरषावो॥ उमा ब्रह्मानि इन्द्रानी। रामादिक गान सुरठानी॥ बीना मृदंग सारंगी। बिष्णु बिधि शिवबहुरंगी॥ गान की तान झरलावै। नृत्यके भेद दरसावै॥ उमग चलि प्रेम सागर से। रसिक हनु-मान नागर से॥ कृपा प्रभ दासपर कीजे। लाल को भक्ति बर दीजै॥७१॥

हनुमत झूले पलनवां। केशरि कपि के कनक सिखर पर रतनन जटित

झुलनवां ॥ अंजनि हरषि झुलावति गावति प्रेम प्रमोद मगनवां । लालमणी यहि समय सुरति करि सुधि बुधि रहि न अगनवां ॥७२॥

चलो घर केशरी कपि के । बधाई गाइये हंसि के ॥ नचाइये नाचिये सजि के । लुटाइये मोतियां गथ के ॥ कलस ध्वज बंद पुर सोहे । देखि सब देवगन मोहे ॥ नेत्र भरि बाल मुख जोहे । भाग सम अंजनी कोहे ॥ मोद भरि गोद दुलरावै । जन्म को लाभ लुटि पावै ॥ लाल मनि भक्ति बर पावै । लाल को जन्म जस गावै ॥७३॥

आज केशरी भवन भये सुत भाग अंजनी कहि म सिराई । ब्रह्मादिक जाके जस गावे सनकसनंदन औ रिषिराई ॥ सो श्री राम काम सब पूरन निज मुख जाको कीरति गाई । सो हनुमान ज्ञान

गुन पूरन प्रगट भये भूतल पर आई ॥ भूमिभार हरि राम सुजस करि कीरति अचल चलाई। लालमनी निसि दिन यह जांचत भक्ति निछावरि मन भरि पाई ॥७४॥ इति हनुमत बधाई ॥

अथ पद-जुलुम तेरे नयना रे सांवलिया। चितवत ही घायल करि डारत परत नहीं चैना रे सांवलिया ॥ कित जाऊं केहि दरस सुनाऊं कोई न पूछे बैना रे सांवलिया। लालमनी के अरज मानि लो बसो उर ऐना रे सांवलिया ॥७५॥

तनिक हंसि बोलो रे सांवलिया। जो कछु चूक परी हो मोसे छमा करि छोलो रे सांवलिया ॥ अंतर पट केवार लगीहै जतन करि खोलोरे सांवलिया। लालमनी पर कृपा करो संग लै डोलो रे सांवलिया ॥७६॥

दोहा-जब लौं उर बसिहौ नहीं,

धरे धनुष सर बान। तब लौं सुख सप-
नो नहीं, लालमनी के प्रान ॥१॥

फूल बंगला—सरजू तीर निकुंज बने
जहँ फूल अनेक कियारिन सोहै। तेहि
मध्य बनो बंगला रंगला जेहि देखत
चित्त हरो सब कोहै॥ तहँ नित्य किसोर
किसोरी रमे बहु जंत्र बजे नटती सखि-
योहे। जेहि देखत लालमनि तेहि को
सुधि रहत नहीं तन प्रान हियो है॥७७॥

चहुं द्वार केवार केवार प्रति बहु फूलन
के परदा सुठि सोहै। फूल चंदोवा यो
पुनि झालर फूलनके बहु झाड बनो है॥
फूल सिंहासन आसन फूल के फूलनके
सुठि छत्र बनो है। लालमनी लिये चंवर
फूल कोई फूलन के सुठि व्यञ्ज लियो
है॥ ७८॥

फूल सिंगार किये दोउ लालन फू-
लन के बहु अस्त्र बनो है। छीट हजार

फुहार चले तहां सावन की जनु वृष्टि ठनी है ॥ बाजे मृदंग मनो घनघोर सुसोर भयो चहु ओरन सोहै । तहं जंत्र बजे बहु नृत्य सजे जेहि देखत लालमनी मन मोहै ॥ ७६ ॥

ध्रुपद—ग्रीषम कुंज बैठे आज प्रीतम प्यारी समाज ललना गन नृत्य साज सुखमा अधिकाई है ॥ हौज है हजार तामे चलतहै फुहार मानो मेघ है अपार तामे वृष्टि झरलाई है । बाजे मृदंग सोर मानो घनघोर जोर चपला सी चमके बहु भूषन पट लाई है ॥ रामाहट मनि निहारी तन मन धन वारी प्यारी निछावरि करत प्रान आनंद सरसाई है ॥८०॥

चलो पिय प्यारी सुखदीजे । तैखाने खस खाने बंगले तहां बैठि रस लीजे ॥ अतर फुहार हजार चले जहां

अरस परस रस पीजे । लालदास नित यह रस माते ऐसी मरजी कीजे ॥८१॥

गृषम कुंज पिया मनभावन सरजू तीर बनी फुलवारी नित बिहरत जहां प्रीतम प्यारी ॥ हौद हजार फुहार चलत जहां चहुं दिसि ते उमडे घन सावन । फूलन केर बनो जहं बंगले चहुं दिसि फूलन के जंगले सिंहासन अरु छत्र चंवर सब साज बनो बहु काम लजावन ॥ अलीगन गावती सुमन लजावती नृत्य भेद बहु वाद्य बजावती हाव भाव करि पियहि रिझावती लालमणि उर बसो सुख पावन ॥८२॥

सरजूतीर निकुंज मंजुद्रुम गृषम कुंज फुहार हजारन । तैह खाने खस-खाने सीतल आसन कुंज दली बिस्तारन ॥ प्राचीन नवीन बारि हौदन भरे बिगसित अंबुज भंवर गुंजारन । कदली

खंभ जवास कियारी छिरक छकाय गंध प्रिया प्यारिन सुमन बिभूषन अपर दुकूलन फुल बंगले लखि रतिपति वारन। अवधकिशोरमनो दंपति छबि सरदससी हिम रितु रितु मद गारन ॥ ८३ ॥

अली अलबेली सेज रच्यो। पलंग पोस जगमगत जोति अति मणिमय ललित खिच्यो॥ बसन भीन सुख बिछव बिछवना अतर गुलाब सिच्यो। सुनि सुकुमार सेज दोउ पौढ़े लखि रति मदन हिच्यौ। मधुरअली बिन मिले महल सुख बिरथा भाग पच्यौ ॥८४॥

सरजू तीर प्रमोद बन कुंज। तहं पिय रास रचे सखि पुंज॥ बहु बिधि गाय निरत सुख दीन। आधि रात छाडि किधर रमि दीन। पइयां तोर लागीं खग मृग द्रुम पात। एहि मग देखुबी प्रीतमजू के जात॥ यकबन गयले दूसर

नियराय। तेहि छन मिल ले ललन हरखाय ॥८५॥

तिरहुताराग—सरजू पुलिन बिहारी नृपलाल। हां आधिराती छाड़ि गये सब बाल छिन छिन सुरति करति रघुबीर ॥ हां हिय बिच उठत बिरह कर पीर अंसुअन भरी हग सीचत शरीर। हां दरस की आस धरत मन धीर सुनु सखिआ सहेलरि बात। हां चांदनि चांद सूरज समतात बनमृग बेलि बिटप तृणजाति ॥ हां सुमन सुगंध नागिन लगी जाती अस कहि सखी जब भई हैं बेहाल। हां कुंजन मांझ मिले प्रिय लाल ॥८६॥

लडैती मेरे ऐगुन चित न धरो। बाम भाग बैठी बिमुखन हित बिरद की लाज करो। हौतो बिगरो अनेक ज़न्म के कृपा करो सु धरो लालमणी की याही

बिनती चरनन से न टरौं ॥८७॥

तुम कहरे भंवरा पिय संदेस। मोहि पिय बिनु निस दिन जिय अनेस ॥ फूले रसाल पनस तमाल बिरहिन के हिय लखि होत साल ॥ अब कल न परत बिन दरस स्याम कछु सुधि न रहत तन काम धाम। इति आइ मिलो श्रीनृ-पति लाल लखि लालमनि को अति बेहाल ॥८८॥

यह सरद रैनि की चैन लखो पिय प्यारी। चलिये असोक बन कुंज रहस चित धारी ॥ हम तरसत हैं पिय प्रान जबन गति सारी। तुमहूं सुख पैहो प्यार जाउं बलीहारी ॥ सुनि बैन अली की सैन अंस भुज धारी। गवने हंसि युगल किशोर आय फुलवारी ॥ कोइ लिये मुरचंग सितार तार कर तारी। कोइ बीणा मृदंग बजाय गाय

लय धारी ॥ केते नचति बाल दै ताल चलति गतिसारी। नूपुर कींकिनि धुनि छाय रही झनकारी ॥ यह रास बिलास अनंत सदा सुखकारी । नित्य लाल-मणी उर ध्यान बसो हितकारी ॥८९॥

रंगीलि सीय लाल दिये गल बहियां। नइ नइ तान लेत दोउ रसिया संग रंगीली बाल॥ नृत्यत तान बन्धान गान सुचि चलत रंगीली चाल। लालमनी दोउ रसिक सिरोमनि करत अनो खो ख्याल ॥ ९० ॥

आज कनकमंदिर मे राजित श्रीरघुनंदन जनककिसोरी। बाजत जंत्र अनेक साज सजि बहु सखि निरतति तान भरोरी ॥ सप्तस्वर त्री ग्राम मूर्छना यकइस लो बिस्तार सजोरी ॥ दुरनि मुरनि गति छुम छननन नूपुर धुनि सुनि मन उमगोरी ।

नटत किसोर किसोरी संग लीन्हे हाव भाव रस करत करोरी। अति आनन्द भयो तेहि अवसर जो जेहि भाव लहत सुख सोरी॥ श्री रामाह्लादि मणी सुख लूटत हृदय बसत प्रिय के नित जोरी॥६१॥

दोहा।

लाल दास यह ग्रंथ रचि, दियो मोहि जन जान।
ताते याको लोभवस, जनि कोई छापै आन॥१॥
रह्यो ग्रंथ बहु दिवस लौ, ग्रंथकार के पास।
अब बैदेहीसरन ने, किन्हों जगत प्रकास॥२॥